आर्य की पहचान

संकलनकर्त्ता :

ओमेन्द्र आर्य

कल्यानपुर, जिला मुरादाबाद

दूरभाष : 8126713970

मूल्य सहयोग राशि :

आर्य की परिभाषा

अथ - भूमिका

एक बार मैं एक पुस्तक पढ़ रहा था जिसमे लिखा था, मुसलमानों की पहचान तो मैंने विचार क्या कि जब मुसलमानों की पहचान कुरान और हज़रत मौहम्मद है और सभी मतमतान्तारों की अपनी-अपनी पहचान है तो आर्यों की पहचान तो अतिउत्तम है।

मैंने आर्य की पहचान नामक एक ट्रैक्ट लिखने का विचार किया।

आर्य का आश्य महान होता है इससे आर्य महाश्य कहलाता है।

आर्य कालजिह होता है अर्थात् जिसकी वाणी असत्य को नष्ट करने वाली हो आर्य कुलक्कर होता है।

अर्थात् जो अपने निश्चय में अटल हो।

- ओमेन्द्र आर्य

आर्य-कोई जाती नही है न आर्य कोई मझब समप्रादाय है, आर्य तो एक डिग्री है जो अनेक परीक्षाओं को देकर प्राप्त की जाती है-

आर्य-की पहचान उसके चाल-चलन रहन-सहन और उसकी वार्ता से ही हो जाती है।

एक बार मैं कुछ लोगों से वार्ता कर रहा था तभी वहाँ एक व्यक्ति ने मुझ से कहा की आप लगता है (आर्य) हों।

आर्य की पहचान उसकी चोटी तथा यज्ञोपवीत से भी होती है।

आर्य की पहचान आर्य के निवास स्थान पर लगे ओम ध्वाज तथा दरवाजे पर लिखे-ओम नमस्ते से हो जाती है।

आर्य-नम्र सुशील-विद्वान और वृद्धों की सेवा करता है।

आर्य - वृद्धों को नित्य अभिवादन करता है।

आर्य-नित्य ही ब्रह्ममहुर्त में उठ जाता है।

आर्य-स्वाध्याय और प्रवचन में आलस्य नहीं करता है।

आर्य-सदा पुरूषार्थ करता रहता है क्योंकि वेद में कहा है (जो कर्म नहीं करता वह दुष्ट है और पुरूषार्थ प्रारब्ध से बड़ा है।)

आर्य-नित्य ही संध्या-उपासना तथा पन्चयज्ञो को सदा करता हैं क्योकि वेद में कहा है। जो यज्ञ नही करता उसका तेज वरचस्य सब नष्ट हो जाता है।

आर्य-सदा विद्या दान को सर्वोपरी मानता है।

आर्य-ब्रह्मचर्य का पालन कर शिक्षा ग्रहण करता है।

आर्य-चतुर्थ आश्रमों को धारण करता है ब्रह्मचर्य आश्रम, ग्रहस्थ, आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम आदि-आदि

आश्रमों को धारण करता है।

आर्य-अपनी ही स्त्री से प्रसन्न और ऋतुगामी होता है, तभी तो आर्य ग्रहस्थ में होते हुए भी ब्रह्मचारी के सदृर्श होता है। इसलिये आर्य के घर में सब सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते है।

आर्य-सत्य असत्य का निर्णय करना और करना सभी आर्यो का परमधर्म मानते है।

आर्य-सदा तर्क युक्त बात को मानते है।

आर्य-कोई भी कार्य करने से पहले यह विचार कर लेता है की जो हम शुभ-अशुभ कर्म करेंगे उसका फल हमें भोग ना ही पड़ेगा।

आर्य-सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ट बनाना चहाता है। क्योंकि वेद में कहा है (कृण्वन्तो विश्वमार्यम)

आर्य-अपना वेद पढ़ना-पढ़ाना यज्ञ, करना-कराना दान लेना और देना कर्तव्य समझते है। आर्यो के यज्ञ का महत्व यज्ञ पृथ्वी को धारण करता है यज्ञ व्यापक है यज्ञ बसाने वाला है। यज्ञ विश्व शरीर की नभि है, यज्ञ यज्ञकर्ता की आयु में बुध्दि करता है यज्ञ कर्ता को देवगण भी चहाते है, यज्ञ श्रेष्ठ करम है।

आर्य-वेद को धर्म का मूल मानते हैं।

आर्यो का लक्ष्य - सिर्फ और सिर्फ धर्म, अर्थ, कर्म करके मोक्ष को प्राप्त करना है।

आर्य जो श्रेष्ट स्वभाव धर्मात्मा परोपकारी सत्याविधादि गुण युक्त और आर्यवर्त्त देश में सब दिन से रहने वाले है उनको

आर्य कहते है। विज्ञानी सत्यवादी विनयी दयालु अनुग्रही धैर्यशाली संयमी दानशील सदाचारी न्यायकारी आदि श्रेष्ठ स्वाभाव वाला आर्य है।

आर्यो की पन्चायतन पूजा जीते माता-पिता, आचार्य, अतिथि और परमेश्वर को जो यथा योग्य सत्कार करके प्रसन्न करना है उसको पन्चायतन पूजा कहते है।

आर्य-अर्थापति कहलाता है अर्थात् जो एक बात के कहने से दूसरी बात बिना कहे समझ जाये उससे आर्य अर्थापति कहलाता है।

आर्य-सब सत्य विधा और जो पदार्थ विधा से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर को मनाते है।

आर्य-वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परमधर्म मानते हैं।

आर्य-सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने मे सर्वदा उधत रहते हैं।

आर्य-सब कार्य धर्म अनुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करते हैं।

आर्य - संसार का उपकार करना अपना मुख्य उद्देश्य मानते है। अर्थात् शरीरिक आत्मिक और समाजिक उन्नति करना।

आर्य- सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य वर्तते है।

आर्य- अविधा का नाश और विधा की वृद्धि सदा करते हैं।

आर्य-सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझते हैं।

आर्य-समाजिक सर्व हिकारी नियम पालन करने में परतंत्र

रहता है और स्वयं के हितकारी नियम में स्वतंत्र रहता है। अरब में कोई स्त्री बीवी के सिवाय किसी और रिश्ते से न रं सकती थी या तो वह बीवी बनकर रहे या रखेल बनकर किर्स अन्य मर्द के साथ बहन माता बेटी और पोती का रिश्ता कोइ महत्व नही रखता था यही कारण था कि मौहम्मद ने अपना पहला विवाह (२५) वर्ष की आयु में माता की आयु वाली स्त्री खदीज़ा बेगम जो (४५) वर्ष की थी से किया और मौहम्मद की (१२) बीबीयाँ थी उनमें से अन्तिम विवाह (६) वर्ष की आयु वाली आयशा से (५२) वर्ष की आयु में किया। जबकी भारत के वीर दुर्गादास औरंगजेब की पोती (सफीयुन्निसा को अपनी पुत्री सम मानता है तथा शिवा जी गोले वादी की (असीर शाहजादी को जो लूट के माला के साथ थी उसे अपनी बेटी तुल्य कहते हैं सीता हरण के बाद जब हनुमान से राम, लक्ष्मण मिले तो हनुमान ने आभूषण पहचानने को दिये तब राम ने लक्ष्मण से सीता के आभूषण पहचानने को कहा लक्ष्मण ने कहा भ्राता श्री मैं माता सीता के आभूषणों में सिर्फ (नपुर) अर्थात् बीछुआ ही पहचानता हूँ क्योंकि मैंने सिर्फ सीता माता के पैर छुते समय नपुरों को ही देखा था। मैंने कभी सीता माता के मुख को नहीं देखा नजर उढ़कर इस लिये मैं किसी अन्य आभूष्ण को नही पहचानता।

जब हनुमान ने लंका को आग लगा दी तब हनुमान का क्रोध जब कम हुआ तब हनुमान के मन में आत्मनिन्दा उत्पन्न हुई जिससेखिन्न हो वे सोचने लगे कि मैंने यह अच्छा नही किया वे

सोचते है-
धन्य है वे माहात्मा लोग जो उत्पन्न हुये क्रोध को वैसे ही बुद्धि से रोक लेते है, जैसे की जल से प्रज्वलित अग्नि शान्त हो जाती है। यदि क्रोध को न रोका जाये तो क्रोध वश पुरूष क्या पाप नही कर सकता क्रोध से वंशीभूत होकर गुरू को भी मार देता है और न करने योग्य कर्म भी कर डालता है, और न बोल ने योग्य बचन भी बोल देता है जो पैदा होते क्रोध को सर्प की कंचुकीवत परे फेंक देता है। वास्तव में वही पुरूष धन्य है।
पवन तथा अंजना ने एक योग्य सन्तान के लिये विवाह के बाद भी (१२) वर्ष का ब्रह्मचर्य का पालन क्या जिसके फल स्वरूप एक योग्य आदित्य ब्रह्मचरी हनुमान का जन्म हुआ।
द्वापर में कृष्ण तथा रूकमणी ने भी एक योग्य सन्तान के लिये विवाह के बाद (१२) वर्ष का ब्रह्मचर्य का पालन किया जिसके फल स्वरूप एक योग्य सन्तान प्रधुमन का जन्म हुआ यह कार्य सिर्फ एक आर्य ही कर सकता है।
आर्य-तीन प्रकार के ब्रह्मचर्य का पालन करते है।
१. वसु २. रूद्र ३. आदित्य
आर्य- का जो परम धन वेद है वह आर्यो के हृदय में स्थित है।
आर्य-के जैसा मन में वैसा वचन में और वैसा ही कर्म में होता है।
आर्य - अत्यन्त दुष्कर कार्य आ पड़ने पर भी कभी दुःखी नहीं होते हैं।
आर्य - ईश्वर के पुत्र है।

महर्षि कणाद ने विवाह के बाद आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया।

महर्षि दयानन्द ने सत्य की खोज में अरबों रूपे की दौलत में ठोकर मारकर सदा वेद का प्रचार किया अपमान सहा (१७) बार विष पीया अन्त में धर्म प्रचार में प्राण भी नौछावर कर दिये।

(आर्य श्रेष्ट और कुलीन मनुष्य को कहते है)

आर्य-ईश्वर का ध्यान, वेद का ज्ञान, यज्ञ का अनुष्ठान, संस्कारी, सन्तान, राष्ट्र हित बलिदान, आर्य की पहचान है।

लिखा तो इससे भी अधिक जा सकता है किन्तु बुद्धिजीवि मनुष्य इतने में ही समझ जायेगा क्योंकि विद्वान को संकेत ही काफी होता है।

(इति ओ३म सम)